# 5

# व्यावसायिक समाज कार्यः प्रकृति, क्षेत्र, उद्देश्य और कार्य

* कान्ता दुर्गाबि

## प्रस्तावना

विभिन्न लोगों ने समाज कार्य को भिन्न–भिन्न अर्थ प्रदान किए हैं। कुछ के लिए समाज कार्य श्रमदान है, दूसरों के लिए यह परोपकार या विपत्ति के समय दी गई राहत है। सड़क निर्माण या घरों या पास–पड़ोस की सफाई जैसी सेवाओं को श्रमदान के अन्तर्गत सम्मिलित किया जायेगा। परन्तु ये सभी सदैव समाज कार्य नहीं होते हैं। समाज कार्य व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं वाले लोगों की सहायता करता है, जैसा कि बच्चों अथवा दम्पतियों की वैवाहिक समस्याएँ तथा गम्भीर रोगियों के पुनर्वास समबन्धी समस्याओं में सहायताएँ करना है।

**समाज कार्य के विषय में पाई जाने वाली भ्रान्तियों के कारण हैं :**

1) समाज कार्यकर्ता, समाज कार्य के पश्चिमी व्यावसायिक घटकों और पारम्परिक धार्मिक घटकों को अलग करने में सक्षम नहीं है।

2) समाज कार्यकर्ता का रोज़मर्रा की समस्याओं में पूर्व व्यस्तता के कारण शब्दवाली को विकासित न कर पाना।

3) समाज विज्ञानों से अधिकांश निष्कर्षों के लिए जाने के कारण इनमें सुस्पष्टता तथा यर्थाता का आभाव है।

4) समाज कार्य ऐसी समस्याओं से संबंध रखता है जिसके विषय में एक साधारण व्यक्ति भी कुछ निश्चित विचार रखता है।

5) राजनीतिज्ञों, फिल्मी सितारों और क्रिकेटरों द्वारा अपने कुछ क्रियाकलापों को समाज कार्य का नाम दिये जाने के कारण इसमें और भ्रम पैदा हो जाता है। जैसे एक प्रशिक्षित कार्यकर्ता वैतनिक होता है और स्वैच्छित तथा अप्रशिक्षित वैतनिक नहीं होते परन्तु सभी साथ–साथ कार्य करते हैं। प्रायः एक साधारण व्यक्ति समाज कार्य के विस्तृत क्षेत्र अन्तर्गत भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमि के व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न किए जाने वाले क्रियाकलापों के अन्तर को नहीं समझ सकता है।

---

* कान्ता दुर्गाबि, आर.एस. कालेज ऑफ सोशल वर्क, हैदराबाद

## समाज कार्य की प्रकृति

कुछ व्यक्तियों की व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक समस्याएँ होती हैं। वे इनका समाधान स्वयं नहीं कर पाते हैं। अतः उन्हें बाहर से सहायता की आवश्यकता होती है। इस प्रकार की सहायता प्रशिक्षित लोगों के द्वारा दी जाती है। सहायता लेने वाला व्यक्ति सेवार्थी कहलाता है और जो प्रशिक्षित व्यक्ति उसकी सहायता करता है वह सामाजिक कार्यकर्ता कहलाता है। इस प्रकार की सहायता के कार्यकलापों को सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य कहा जाता है।

सेवार्थी के अन्दर दी गई स्वयं के सुधार के लिए अभिप्रेरणा तथा सहायता को स्वीकार करने की तत्परता समाज कार्य के लिए पूर्व शर्त है। समाज कार्यकर्ता केवल सेवार्थी के स्वयं के प्रयासों को उसकी स्थिति में सुधार के लिए जोड़ता है, अपनी सलाह या समाधान सेवार्थी पर थोपता नहीं है और सेवार्थी के आत्म निर्णय के अधिकार का सम्मान करता है। समाज कार्यकर्ताओं को स्वयं को श्रेष्ठ नहीं समझना चाहिए या सवेवार्थी का आनादर नहीं करना चाहिए। उनके अन्दर सेवार्थी की परिस्थिति में स्वयं को रखकर उसे समझने के लिए प्रयास करने की तंवनुभूति होनी चाहिए। परन्तु उस समय उसे स्वयं को सेवार्थी के जैसा नहीं महसूस करना चाहिए। समाज कार्यकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह सेवार्थी की भावनाओं को समझे और उसे स्वीकार करे।

घोर विपत्तियों और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सैकड़ों लोग पीड़ितों की सहायता के लिए नकद या वस्तुएँ दान में देते हैं। उनका पीड़ितों के साथ कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क नहीं होता। इसे सामान्यतः समाज सेवा कहते हैं जिसमें केवल सहायता पीड़ित तक पहुँचती है। परन्तु समाज कार्य में कार्यकर्ता और सेवार्थी की आमने सामने होने वाली अनतःक्रिया महत्वपूर्ण है। कुछ परिस्थितियों में अस्थायी राहत के अतिरिक्त, समाज कार्यकर्ता घोर विपत्ति एवं प्राकृतिक आपदाओं से संबंधित अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों एवं समायोजन समस्याओं में सुधार लाने में सहायता करता है। इस प्रकार के गम्भीर मामलों और सम्बन्धों से सम्बन्धित अन्य समस्याओं के साथ कार्य करने की सम्बद्धता को हम समाज कार्य कहते हैं।

## समाज कार्य का वैज्ञानिक आधार

समाज कार्य व्यवहार सशक्त वैज्ञानिक आधार से युक्त है। समाज कार्यकर्ता 'ज्ञान के लिए ज्ञान' में विश्वास नहीं करते हैं। समाज कार्य वैज्ञानिक ज्ञान रखता है यद्यपि यह ज्ञान विभिन्न सामाजिक और जीव विज्ञानों से लेकर विकसित किया गया है। समाज कार्य अन्य विद्या विशेष की भांति तीन प्रकार का ज्ञान रखता है :

1) प्रमाणित ज्ञान

2) परिकल्पित ज्ञान जिसे प्रमाणित ज्ञान में हस्तांतरित किया जाना आवश्यक होता है।

3) स्वीकृत ज्ञान जिसे बुद्धि द्वारा व्यावहारिक प्रयोग के माध्यम से परिकल्पित ज्ञान में और फिर प्रमाणित ज्ञान में हस्तांतरित किया जाता है।

समाज कार्य का ज्ञान समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, मानवशास्त्र; राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, जीव विज्ञान, मनोरोग विज्ञान, विधि शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र इत्यादि से लिया गया है। इन सभी विद्या विशेषज्ञों ने मानव प्रकृति को समझने में अत्याधिक योगदान दिया है। समाज कार्यकर्ता इस ज्ञान का प्रयोग अपने सेवार्थियों की समस्याओं के समाधान में करते हैं।

समाज कार्य की जड़ें मानवतावाद में निहित हैं। यह "वैज्ञानिक मानवतावाद" है क्योंकि यह वैज्ञानिक आधार का उपयोग करता है। समाज कार्य कुछ निश्चित मूल्यों पर आधारित है जब उन्हें संगठित किया जाता है तब उसे "समाज कार्य का दर्शन" कहा जाता है। समाज कार्य आवश्यक योग्यता एवं व्यक्ति की प्रतिष्ठा में विश्वास पर आधारित हैं आदमी सम्मान योग्य है क्योंकि मानव ही सम्माननीय है न कि इस कारण कि वह धनी या शक्तिशाली है। उसकी योग्यता और गरिमा मानवीय प्रकृति के कारण विभूषित हैं जिसे प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान देना चाहिए।

समाज कार्य किसी भी प्रकार के जाति, रंग, प्रजाति, लिंग या धर्म पर आधारित किए जाने वाले भेद–भाव के विरूद्ध है। समाज कार्य 'सामाजिक डार्विनवाद' और 'सर्वाधिक योग्य के ही जीवित रहने' के सिद्धान्त के विरूद्ध है, इसका अर्थ है कि समाज कार्य इस बात में विश्वास नहीं रखता कि केवल शक्तिशाली ही समाज में जीवित रहेगा और कमज़ोर का शीघ्रनाश होगा। जो लोग कमज़ोर हैं, अक्षम हैं और/या जिन्हें देखभाल की आवश्यकता है वे सभी समान रूप से समाज कार्यकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण हैं। व्यक्ति को उसकी सम्पूर्णता के साथ समझा जाता है, जिसका अर्थ है उसके मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं की विभिन्नताओं के बावजूद उसके महत्व एवं गरिमा का ध्यान रखा जाता है। समाज कार्यकर्ता व्यक्ति की क्षमता में विश्वास करता है और व्यक्तियों की विभिन्नताओं के बावजूद उसके महत्व एवं गरिमा का ध्यान रखा जाता है। समाज कार्यकर्ता व्यक्ति की क्षमता में विश्वास करता है और व्यक्तियों की विभिन्नताओं को मान्यता देता है। व्यक्ति के आत्म–निर्णय को महत्व दिया जाता है। उसे परिवार और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी समझने का प्रयास करना चाहिए। समाज कार्य 'आदर्शवाद और यथार्थवाद' का एक संगम है। समाज कार्यकर्ता के लिए व्यक्ति महत्वपूर्ण है, परन्तु समाज भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। व्यक्ति समाजिक परिस्थितियों के साँचे में अत्यन्त गहरायी से ढला हुआ होता है। परनतु

अन्ततः व्यक्ति अपने स्वयं के आचरण और व्यवहार के लिए उत्तरदायी होता है। कार्यकर्ता, सेवार्थी की उस समस्या का समाधान करता है जिससे वह पीड़ित होता है, इसलिए समस्या का समाधान समाज कार्य की प्रकृति है।

## समाज कार्य का क्षेत्र

समाज कार्य का सम्बन्ध ऐसे व्यक्तियों की सहायता करने से है जिन्हें इसकी आवश्यकता है जिससे कि वे अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान करने की क्षमता को विकसित कर सकें। यह विज्ञान एवं कला है। समाज कार्य इस अर्थ में विज्ञान है कि विभिन्न विषयों से लिए गए ज्ञान से इसके ज्ञान के स्वरूप का निर्माण समाज कार्यकर्ताओं के लिए होता है और वे इस सैद्धान्ति आधार का प्रयोग लोगों की सहायता के लिए व्यवहार में करते हैं। जो सिद्धान्त स्वयंसिद्ध होते हैं, उन्हें व्यवहार में प्रयुक्त किया जाता है। कार्य करने के लिए वांछित क्षमता को निपुणता के नाम से जाना जाता है। इसलिए, अपने चयनित ज्ञान और मूल्यों के संग्रह के साथ व्यावसायिक समाज कार्य व्यावसायिक सेवा में हस्तांतरित हो गया है।

समाज कार्यकर्ता को अपने सेवार्थी के साथ सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित करना होता है। उसे यह ज्ञात होना चाहिए कि किस प्रकार साक्षात्कार किया जाना चाहिए और किस प्रकार प्रतिवेदन लिया जाना चाहिए। उसमें निदान करने की योग्यता होनी चाहिए जिसका आशय है कि वह समस्या के कारण का पता लगाकर अन्ततः उसके उपचार की योजना बना सकता है। समाज कार्य में चार प्रमुख चरण सम्मिलित हैं: समस्या का निर्धारणा, इसके समाधान की योजना, योजना का कार्यान्वयन तथा परिणाम का मूल्यांकन। समाज कार्यकर्ता की अपने सेवार्थी की सहायता में तीव्र रूचि होती है फिर भी उसकी अकेली रूचि समस्या का समाधान नहीं कर पायेगी। सेवार्थी की सहायता किस प्रकार की जाए, इस बात का ज्ञान उसे होना चाहिए। समाज कार्य की प्रणालियों से उसे लोगों की सहायता करने के ढंग को समझने में मदद मिलेगी समाज कार्य की प्रणालियाँ निम्न प्रकार हैं :

1) सामाजिक केस अध्ययन
2) सामाजिक सामूहिक कार्य
3) सामूदायिक संगठन
4) समाज कार्य शोध
5) समाज कल्याण प्रशासन

6) सामाजिक क्रिया

प्रथम तीन को प्रत्यक्ष सहायता प्रणालियाँ और अन्तिम तीन को द्वितीयक या सहायक प्रणालियों के रूप में जाना जाता है। समाज कार्य की ये छः प्रणालियाँ लोगों की व्यवस्थित और नियोजित सहायता कर रही है।

समाजिक केस अध्ययन किसी व्यक्ति की समस्याओं का उसके सम्पूर्ण पर्यावरण या उसके एक भाग के साथ व्यवहार करता है। एक व्यक्ति ऐसी समस्या से ग्रसित है, जिसका वह स्वयं हल करने में सक्षम नहीं है, क्योंकि समस्या के कारण उसके नियन्त्रण से परे हैं। उसकी व्यग्रता कुछ समय के लिए उसे अस्थायी रूप से इसके समाधान के लिए अयोग्य बनाती है। किसी भी प्रकार की स्थिति में उसकी सामाजिक क्रिया बिगड़ जाती है। केस अध्ययनकर्ता सेवार्थी के सम्पूर्ण पर्यावरण के विषय में सूचनाएँ प्राप्त करता है, कारणों का पता लगाता है, उपचार की योजना तैयार करता है और व्यावसायिक सम्बन्धों की स्थापना के माध्यम से सेवार्थी के प्रत्यक्षीकरण और अभिवृत्तियों में परिवर्तन का प्रयास करता है।

समाजिक सामूहिक कार्य एक समाज कार्य सेवा है जिसमें व्यावसायिक दृष्टि से प्रशिक्षित एक व्यक्ति, समूह अनुभवों के माध्यम से व्यक्तियों की इस प्रकार सहायता करता है जिससे वे सम्बन्धों में सुधार और सामाजिक क्रिया की ओर उन्मुख हो सकें। सामूहिक कार्य में व्यक्ति महत्वपूर्ण होते हैं और उनके सम्बन्धों में सुधार के लिए लचीले कार्यक्रम, समूह में व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास को महत्व देकर सहायता की जाती है। समूह एक माध्यम है और इसके द्वारा और इसके अन्तर्गत, आवश्यक परिवर्तन और समायोजन के लिए व्यक्तियों की सहायता की जाती है।

सामुदायिक संगठन, समाज कार्य की एक अन्य प्रणाली है। समूहों के अस्तित्व से निर्मित होने वाले समुदाय का अर्थ सम्बन्धों की व्यवस्थित संरचना है, परन्तु वास्तव में कोई भी समुदाय पूर्णतया व्यवस्थित नहीं होता है। सामुदायिक संगठन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा समुदाय में सम्बन्धों के सुधार के लिए व्यवस्थित प्रयास किया जाता है। सामूदायिक संगठन के अन्तर्गत समस्याओं के समाधान के लिए संसाधनों का पता लगाना, सामाजिक

सम्बन्धों का विकास करना तथा समुदाय के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक कार्यक्रमों का क्रियान्वय आदि सभी सम्मिलित है। इस प्रकार से समुदाय को निश्चित रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाना चाहिए एवं समुदाय के सदस्यों के बीच सहकारिता की मनोवृत्तियों का विकास होना चाहिए।

सम्बन्धों का विकास करना तथा समुदाय के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक कार्यक्रमों का क्रियान्वय आदि सभी सम्मिलित है। इस प्रकार से समुदाय को निश्चित रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाना चाहिए एवं समुदाय के सदस्यों के बीच सहकारिता की मनोवृत्तियों का विकास होना चाहिए।

समाज कल्याण प्रशासन एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से सार्वजनिक एवं निजी दोनों प्रकार की समाज कार्य सेवाओं को व्यवस्थित किया जाता है और उनका प्रशासन किया जाता है। प्रशासन के अन्तर्गत समाज कार्यकर्ता द्वारा कार्यक्रमों का विकास, संसाधनों को गतिशील बनाना, कार्मिकों की भर्ती एवं चयन, समुचित संगठन, समन्वय, निपुणता से युक्त सहानुभूति पूर्ण नेतृत्व का प्रबन्ध करना कर्मचारियों का निर्देशन और पर्यवेक्षण, वित्तसम्बन्धी गतिविधियों तथा कार्यक्रमों के लिए बजट का निर्धारण आदि कार्य किये जाते है।

समाज कार्य शोध, नए तथ्यों का पता लगाने पुरानी परिकल्पनाओं का परीक्षण करने, वर्तमान सिद्धान्तों का सत्यापन करने और समस्याओं के आकस्मिक सम्बन्धों जिसमें समाज कार्यकर्ता की रूचि होती है की खोज करने के लिए एक व्यवस्थित जाँच–पड़ताल है। किसी भी प्रकार के समाज कार्य कार्यक्रम को वैज्ञानिक तरीके से आरम्भ करने के लिए सामाजिक शोध और सर्वेक्षणों के माध्यम से प्रदत्त परिस्थिति का व्यवस्थित अध्ययन करना आपश्यक होता है।

सामाजिक क्रिया का उद्देश्य सामाजिक प्रगति को सुनिश्चित करने के लिए इच्छित परिवर्तनों को लाना होता है। सामाजिक क्रिया प्रणाली का उपयोग करने के लिए समाज कार्यकर्ता को सामाजिक समस्या के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना, संसाधनों को गतिशील बनाना, अवांछनीय व्यवहारों के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए विभिन्न वर्गों के लोगों को तैयार करना और कानूनों के निर्माण के लक्ष्य को प्राप्त करने जैसे कुछ क्रियाकलाप करने होते हैं। यह सामुदायिक आवश्यकताओं और समाधानों, जो कि मुख्यतः वैयक्तिक और सामूहिक प्रयासों तथा स्वयं सहायता क्रियाकलापों के माध्यम से किये जाते हैं, के बीच पर्याप्त सन्तुलन बनाए रखने का प्रयत्न करता है।

## समाज कार्य के कार्य

समाज कार्य के मूल कार्य पुनः स्थापना, संसाधनों का प्रावधान करना तथा निरोध है। ये परस्पर एक दूसरे पर आश्रित तथा एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबन्धित होते है। क्षीण सामाजिक क्रिया के पुःस्थापना के दो पहलू हैः इलाज और पुनर्वास। इलाज के द्वारा व्यक्ति

सामाजिक क्रिया के पुःस्थापना के दो पहलू हैं: इलाज और पुनर्वास। इलाज के द्वारा व्यक्ति की क्षीण सामाजिक क्रिया के उत्तरादायी कारणों को दूर किया जाता है। इसका अर्थ है कि बिगड़े हुए अन्तर्वैयाक्तिक-सम्बन्धों को इसके उत्तरदायी कारणों को हटाकर ठीक किया जाना। समस्या के उत्तरदायी कारणों को हटाने के पश्चात् व्यक्ति को नई परिस्थिति की आवश्यकता के साथ समायोजन सहायता की जाती है। व्यक्ति को नये उपचार या सुझाये गये उपायों के साथ समायोजन करना होता है। व्यक्ति की नयी परिस्थिति की आवश्यकता के साथ समायोजन में सहायता की जाती है। यह पुनर्वासन के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए, एक आंशिक रूप से बहरे बच्चे जिसके सामाजिक सम्बन्ध उसकी समस्या के कारण बिगड़े हैं, के इलाज के उपाय के रूप में सुनने में सहायता का ढंग सुझाया जाता है। यह इलाज का पहलू है। व्यक्ति का स्वयं सुनने के लिए दी गयी सहायता के साथ समायोजन प्राप्त करना पनर्वास पहलू है।

संसाधनों के प्रावधान के दो पक्ष हैं– विकासात्मक और शैक्षिक पक्ष। विकासात्मक पक्ष की संरचना संसाधनों की प्रभाव पूर्णता में वृद्धि करने तथा प्रभावी सामाजिक अन्तःक्रिया के लिए व्यक्तित्व संम्बन्धी कारकों में सुधार लाने के लिए की गई है। उदाहरण के लिए श्री 'क' और श्रीमती 'ख' कुछ वैचारिक मतभेदों के कारण उत्पन्न विरोध के साथ खुशहाली के साथ रह रहे हैं। वे तलाक लेने का रास्ता नहीं अपनाने जा रहे हैं और उनके वैवाहिक जीवन में कोई समस्या नहीं है। परन्तु एक परिवार परामर्श संस्था की मदद से ये अपने मतभेदों की पहचान कर सकते हैं और बेहतर ढंग से जीवन व्यतीत कर सकते हैं। यह विकासात्मक पक्ष के नाम से जाना जाता है। नयी या परिवर्तित परिस्थितियों के लिए विशिष्ट दशाओं और आपश्यकताओं के जनसमुदाय के पहचान साथ कराने के लिए शैक्षिक पक्ष की योजना बद्ध संरचना की गयी है। उदाहरण के लिए एक परामर्श दाता द्वारा पारिवारिक और वैवाहिक समस्याओं को कम करने के लिए की गयी बातचीत एक शैक्षिक प्रक्रिया है।

समाज कार्य का तीसरा कार्य सामाजिक अकर्मण्यता का निवारण करना है। इसमें प्रारम्भिक खोज, उन दशाओं और परिस्थितियों का नियंत्रण या निष्कासन जो कि प्रभावी सामाजिक क्रिया में सक्रियता से बाधा डाल सकती हैं, सम्मिलित हैं।

उदाहरण के लिए कुछ क्षेत्रों में युवा क्लबों को शुरू करके बच्चों की बाल अपराध से बचाव में सहायता की जा सकती है। युवाओं के लिए पूर्व–वैवाहिक परामर्श भविष्य में वैवाहिक समस्याओं की रोक थाम कर सकेंगे।

## समाज कार्य के उद्देश्य

समाज कार्य का उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करके उनके दुखों को कम करना है। व्यक्तियों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी मनो–सामाजिक समस्याएँ होती हैं। इसके आलावा बच्चों और वयस्कों में समायोजन सम्बन्धी समस्या पर अलग से कार्य किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में समाज कार्य अवकाश के समय की बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयोग कर व्यक्तियों को मनोरंजनात्मक सेवाएँ प्रदान कर व्यक्तियों, समूहों और परिवारों की सामाजिक क्रिया में वृद्धि करता है। इस प्रकार से वह समाज में बाल अपराध और अपराध की रोकथाम कर सकता है तथा वह सेवार्थी व्यवस्था को आवश्यक संसाधनों को जोड़ता हैं समाज कार्य व्यक्ति की अभिवृद्धि और विकास के लिए पर्यावरण में परिवर्तन लाकर उसकी सहायता करता है।

समाज कार्य प्रजातंत्रिक विचारों को प्रदान करता है और उसे अच्छे अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के विकास के योग्य बनाता है जिससे कि वह परिवार और पड़ोस में समुचित समायोजन स्थापित कर सके।

समाज कार्य 'सामाजिक डर्विनवाद' में विश्वास नहीं रखता है। यह 'सर्वाधिक योग्य को ही जीवित रहने के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करता है। इसलिए यह कानूनी सहायता के माध्यम से समाजिक न्याय के लिए कार्य करता है। यह सामाजिक नीति के विकास के माध्यम से भी सामाजिक न्याय बढ़ाता है। इसी प्रकार समाज कार्य सामाजिक सेवा के वितरण के तंत्र के संचालन में सुधार करता हैं।

## समाज कार्यकर्ता की वैयक्तिक अभिवृति

समाज कार्यकर्ता भी एक मनुष्य ही होता है। सभी भावनाओं का अनुभव वह भी एक मनुष्य की भाँति करता है। जैसे ही वह दूसरों की सहायता करने की स्थिति में होता है, वैसे ही उसमें श्रेष्ठता का अनुभव करेंगे की प्रवृत्ति विद्यमान होती है। समाज कार्यकर्ता द्वारा सेवार्थी की समस्या की पहचान करते समय कभी कभी जब सेवार्थी अपने दुखों और भूतकाल के दर्दभरे अनुभवों का वर्णन कर रहा होता है तो कार्यकर्ता, सेवार्थी की ही तरह अनुभव करता है या समाज कार्यकर्ता की यह प्रवृत्ति हो सकती है कि वह सेवार्थी को इस प्रकार देखें जैसे कि दर्पण में अपना प्रतिरूप दिख रहा हो। यह सभी कार्यकर्ता के प्रारम्भिक जीवन ओर अनुभव में मूल कारण हो सकते हैं। जिस समय वह व्यावसायिक रूप से सहायता प्रदान करने की भूमिका में होता है उसे अपनी स्वयं की भावनाओं को समझना चाहिए और नियन्त्रित करना चाहिए। उसे सेवार्थी की भावनाओं को जैसी वे हैं वैसे ही स्वीकार करना

चाहिये। उसे उन्हें अपनी भावनाओं के साथ मिश्रित नहीं होने देना चाहिए। उसे सेवार्थी की भावनाओं और संसाधनों के रचनात्मक और सकारात्मक उपयोग के क्षण सेवार्थी की सहायता पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये।

## समाज कार्य और नैतिक संहिता

कोई भी व्यवसाय समान्यतः अपने व्यावसायिक व्यक्तियों को अत्यधिक प्राधिकार देता है। साधारण व्यक्ति जिसे कि समाज कार्य सहायता की आपश्यकता है वह कदाचित समस्या की जटिलताओं के विषय में नहीं जानता है। व्यावसायिक सलाह बहुमूल्य होती है और उसके निर्णय पर कदाचित प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा कसता है। परन्तु जब शक्ति को व्यवहार के मानदण्ड द्वारा नियमित नहीं किया जाता तो यह अत्याचार में परिवर्तित होने के लिए उत्तरादायी होती है। समाज कार्यकर्ता अपनी व्यावसायिक सेवा के लिए अधिक मूल्य ले सकते हैं या जनता से अवांछित मांग कर सकते हैं। इसलिए कुछ निश्चित मानदण्डों के द्वारा व्यावसायिक संगठनों द्वारा आचार संहिता का विकास किया गया है।

### नैतिक संहिता का दर्शन

व्यावसायिक व्यक्ति का सेवार्थी, नियोजक संस्था और सहकर्मियों के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व होता है। उसकी समुदाय और उसे व्यवसाय के प्रति भी जिम्मेदारी होती है। व्यावसायिक व्यक्ति का उसके सेवार्थी के सम्बन्ध उसकी सेवा का आधार है। सम्बन्ध निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ होने चाहिये। व्यावसायिक व्यक्ति के भीतर लिंग, जाति, धर्म या रंग के आधार पर भेद–भाव नहीं होना चाहिए। व्यावसायिक व्यक्ति को सेवार्थी की समस्या तथा प्रत्येक सूचना को अत्यधिक गोपनीय रखना चाहिए। उसके अपने सहकर्मियों के साथ समानता सहयोग, सहायता की प्रवृत्ति और प्रतिस्पर्धा पर आधारित अच्छे सम्बन्ध होने चाहिए।

व्यावसायिक व्यक्ति की समाज के प्रति जिम्मेदारी अपनी समस्त क्षमताओं और संसाधनों का योंगदान समाज के अच्छे उपयोग के लिए करने में होती हैं। व्यवसाय के प्रति यह जिम्मेदारी स्वयं व्यावसायिक व्यक्ति के प्रति जिम्मेदारी से श्रेष्ठ होती है। सामाजिक नियन्त्रण के औपचारिक और अनौपचारिक ढंग सदस्यों को आचार संहिता के अनुरूप कार्य करने को सुनिश्चित करने के लिए है।

व्यवसाय को जब मान्यता दी जाती है तो वह अस्तित्व में आता है। केवल तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त लोगों के लिए नौकरियों को आरक्षित करके, नौकरियों में शैक्षिक योग्यता को प्राथमिकता प्रदान करके और वित्तीय संसाधनों के लिए प्रोत्साहन और उन्हें प्रदान करके ही मान्यता दी जाती है।

**समाज कार्यकर्ता का आचरण संबंधी उत्तरादियत्व**

समाज कार्यकर्ता के सेवार्थियों, नियोजक संस्थाओं, सहकर्मियों, समुदाय एवं व्यवसाय के प्रति आचरण संबंधी उत्तरदायित्व होते हैं।

समाज कार्यकर्ता के सेवार्थी के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व व्यक्ति के कल्याण के रूप में उसका प्राथमिक कर्तव्य होता है। समाज कार्यकर्ता को वैयक्तिक रूचियों की अपेक्षा व्यावसायिक उत्तरदयित्व को महत्व देना चहिए। उसे अपने सेवार्थी के (आत्म–निर्णय) विचारों का सम्मान करना चाहिये। उसे सेवार्थी से सम्बन्धित समस्त विषयों को गोपनीय रखना चाहिए। समाज कार्यकर्ता को सेवार्थियों के वैयक्तिक विभिन्नताओं का सम्मान करना चाहिये और गैर व्यावसायिक आधार पर कोई विभेद नहीं रखना चाहिए।

समाज कार्यकर्ता का उसके सेवायोजक के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व होता है और उसे उसके प्रति निष्ठान होना चाहिए। उसे अपने सेवायोजक को सही और यथार्थ सूचनाएँ उपलब्ध करानी चाहिए। समाज कार्यकता संस्था की सेवा की गुणवत्ता और परिणाम के लिए उत्तरदायी होना चाहिए और उसे संस्था की व्यवस्था और प्रक्रिया का सर्वेक्षण करते रहना चहिए। यहां तक कि अपने सेवायोजन की समाप्ति के पश्चात् भी उसे अपनी संस्था समाज कार्यकर्ता को अपने सहकर्मियों का सम्मान करना चाहिए और उन्हें उनके उत्तरदायित्यों को पूर्ण करने में सहायता करनी चाहिए। समाज कार्यकर्ता को अपने ज्ञान को जोड़ने के उत्तरदायित्व की कल्पना कर लेना चाहिए। उसे सभी के साथ बिना किसी भेदभाव के व्यवहार करना चाहिए और शोध और व्यवहार में सहयोग करना चाहिए।

समाज कार्यकर्ता का समुदाय के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व है कि वह उसे अनैतिक व्यवहारों से बचाए उसे समुदाय की उन्नति के लिए ज्ञान और निपुणताओं का योगदान देना चाहिए।

ऊपर दिए गए सभी पहलुओं के अतिरिक्त समाज कार्यकर्ताओं के अपने स्वयं के व्यवसाय के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व हैं। उसे अपने व्यवसाय को अन्यायपूर्ण आलोचना या गलत व्याख्या से रक्षा करना चाहिए। उसे अपने आत्मानुशासन और व्यक्तिगत व्यवहार के माध्यम से जनता के विश्वास को कायम रखना चाहिए और इसमें अभिवृद्धि करनी चाहिए। समाज कार्यकर्ता को सदैव इस बात का समर्थन करना चाहिए कि व्यावसायिक व्यवहार के लिए व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता होती है।

# व्यावसायिक समाज कार्य की विचारधाराएँ

यदि समाज कार्य की वैश्विक (भूमण्डलीय) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को विश्लेषित किया जाये तो हम समाज कार्य की निम्नलिखित विचारधाराओं को समझ सकते हैं।

## परोपकार के रूप में समाज कार्य

धर्म व्यक्ति को अपने पड़ासियों जिनको सहायता की आवश्यकता है, सहायता के लिए प्रेरणा देता था। आभाव ग्रस्त व्यक्तियों को भिक्षा दी जाती थी। जो व्यक्ति उनकी सहायता करते थे, वे परोपकार में भिक्षा देते थे। इस प्रकार से पाश्चात्य देशों ने समाज कार्य व्यवहार को परोपकार के साथ प्रारम्भ किया। जैस ही धर्म ने उन्हें निर्धन व्यक्तियों की सहायता के लिए प्रोत्साहित किया उन्होंने भिक्षा नकद और वस्तु के रूप में देना प्रारम्भ कर दिया। शीघ्र ही उन्होंने अनुभव किया क वे निर्धनों की वृद्धि के लिए दान नहीं दे सकते है और इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए एक ढंग की आवश्यकता थी। उसी समय राज्य (ब्रिटिश सरकार) ने कानून बनाकर और राज्य द्वारा निर्धनों की देखभाल आरम्भ करके इन निर्धनों की समस्या में हस्तक्षेप किया।

## कल्याण समाज कार्य दृष्टिकोण

राज्य ने अपनी सेवा के हिस्से को भिक्षा देकर और यू.के. में एलिजावेथन पुअर लॉ, 1601 पारित करके निर्धनों के लिए कार्य करना प्रारम्भ किया। इस अधिनियम ने निर्धनों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया– शारीरिक रूप से सक्षम निर्धन, शक्तिहीन निर्धन और आश्रित बच्चे। पहली श्रेणी के व्यक्तियों को कार्य–गृहों में कार्य करने के लिए बाध्य किया गया। इसके विपरीत अन्य दोनों श्रेणियों के लोगों को भिक्षागृह में रखकर भिक्षा दी जाती थी। यह अधिनियम, और बाद में पारित किए गए इस प्रकार के अन्य अधिनियम निर्धनता की समस्या को सुलाझाने में सक्षम नहीं हुए। सरकार ने महसूस किया कि समस्या को समझने के लिए एक वैयक्तिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। समस्या एक हो सकती है परन्तु विभिन्न व्यक्तियों के लिए उसी समस्या के विभिन्न कारण हो सकते हैं। उन्होंने महसूस किया कि इसके समाधन के लिए व्यक्तिगत कारणों का पता लगाया जाना चाहिए। इसलिए इस कार्य के को करने के लिए चैरिटी आर्गेनाइजेशन सोसाइटी की शुरूआत हुई।

### नैदानिक समाज कार्य दृष्टिकोण

1935 में में निर्धनों की सहायता की आवश्यकता को मान्यता प्रदान करते हुए सामाजिक सुरक्षा अधिनियम पारित किया गया। यह औद्योगीकरण की समस्याओं से निपटने के लिए था। उन्होंने लोगों की कुछ वित्तीय समस्याओं का उत्तरदायित्व ले लिया। बड़ी संख्या में स्वयं सेवकों को काम में लिया गया। ऐसे स्वयं सेवक जो कि प्रशिक्षित थे और वैयक्तिक सेवा कार्य व्यवहार भी कर सकते थे, वे भी अप्रशिक्षित लोगों का पर्यवेक्षण करने लगे।

अधिकांश लोगों ने महसूस किया कि धन मात्र से ही समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता है इसलिए वे परामर्श की भूमिका की ओर उन्मुख हो गए। परामर्श ने अपना आधार मनोवैज्ञानिक विज्ञानों विशेषरूप से मनोविश्लेषण सिद्धान्त से प्राप्त किया।

नैदानिक समाज कार्य, प्रत्यक्ष समाज कार्य हस्तक्षेप का विशिष्ट रूप है जो व्यक्तियों समूहों और परिवारों के साथ जो कि अधिकतर कार्यकर्ता के कार्यालय में स्थान पाता है। इस अभियान में कार्यकर्ता स्वयं के अनुशासित प्रयोग द्वारा व्यक्ति और उसके सामाजिक पर्यावरण के बीच अन्तः क्रिया को सुगम बनाता है।

### पारिस्थितिकी समाज कार्य दृष्टिकोण

पारिस्थितिकी समाज कार्य दृष्टिकोण में समस्याओं को व्यक्ति की व्यक्तिगत कमी के रूप में न देखकर पर्यावरण में कमी के रूप में देखा जाता है। समाज कार्य की परम्परा जो सामाजिक उपचार और समाज सुधार पर बल देती थी पारिस्थितिकी दृष्टिकोण का आधार बन गई। व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता और उनकी सेवायोजक संस्थाएँ उन्हें व्यवस्था में परिवर्तन का लक्ष्य रखने वाले परिवर्तन अभिकर्ता के रूप में महत्व प्रदान करती है। समस्या की पहचान करना, सेवार्थी और लक्ष्य व्यवस्था (जो समस्या उत्पन्न कर रही है), की पहचान करना, सेवार्थी के सहयोग से परिवर्तन के लक्ष्य पर निर्णय लेने की प्रक्रिया का पता लगाना एवं कार्य व्यवस्था की पहचान करना जिसके द्वारा परिवर्तन अभिकर्ता परिवर्तन के लिए अपने लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकें, इत्यादि पारिस्थितिकी दृष्टिकोण के चरण है।

### अतिवादी समाज कार्य दृष्टिकोण

समाज कार्यकर्ता केवल अक्षम और पथभ्रष्ट लोगों की देखभाल से ही सन्तुष्ट नहीं हैं। 1970 में, मार्क्सवाद के प्रभाव के कारण, उन्होंने विचार किया कि बहुत सी समस्याओं का कारण अत्याचार है। उन्होंने अपने व्यावसायिक उत्तरदायित्वों में सुधार और समतावादी सामाजिक व्यवस्था के विकास को सम्मिलित करके उसका विस्तार किया।

कुछ अतिवादी व्यवसाय में सामाजिक सुधार और विकास की पहुँच से बाहर जा चुके हैं। समाज कार्यकर्ताओं का लक्ष्य समायोजन की समस्याओं को निपटाने एवं व्यक्ति की एक अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के शिकार के रूप में देखने के स्थान पर सामाजिक समस्याओं एवं संबंधों में आधारभूत परिवर्तनों द्वारा व्यवस्था को परिवर्तित करना है। इसे अतिवादीसमाज कार्य कहा जाता है किन्तु विभिन्न कारणों से यह भी समस्याओं के समाधान में असफल रहा है।

### प्रगतिशील समाज कार्य

प्रगतिशील समाज कार्यकर्ता अपना तादाम्य अतिवादी व्यक्तियों, सक्रिय व्यक्तियों इत्यादि के साथ कर सकते हैं। वे समाज में व्याप्त अन्याय से दुखी होते हैं। प्रगतिशील समाज कार्यकर्ता समाज में अत्याचार से जुड़े युक्त तत्वों में परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं। वे उने घावों को भरने में सहायता करते हैं। और उन्हें अपना भविष्य बनाने के लिए समुचित विकल्प तैयार करने के लिए शिक्षित करते हैं।

### नारीवादी समाज कार्य

उदार नारीवाद, विचारों का एक सम्प्रदाय है जो लैंगिक समानता पर बल देता है और कानूनी सुधार तथा महिलाओं और पुरूषों दोनों के लिए मताधिकार, शिक्षा और नौकरी के लिए समान अवसरों की माँग करता है। उदार नारीवादी समाज में लिंग सम्बन्धी उत्पीड़न के मूल कारणों का विश्लेषण नहीं करते हैं। मार्क्सवादी महिलावादियों का विचार है कि महिलाओं का उत्पीड़न पूँजीवादी उत्पादन पद्धति का परिणाम है। जहाँ पर घरेलू कार्यों और मजदूरी सहित कार्य में बँटवारा है वहाँ केवल मजदूरी सहित कार्य ही उत्पादक समझा जाता है।

## आध्यात्म एवं समाज कार्य

भारत अनेक धर्मों और श्रेष्ठतम धार्मिक विचारधाराओं की जन्म भूमि रहा है। हिन्दू धर्म में वेद और उपनिषद आध्यामिक आधार प्रदान करते हैं। वे एक व्यक्ति को उसके आन्तरिक बलों को नियन्त्रित करने का ढंग उपलब्ध कराते हैं जिससे वह परम सत्य को समझ सके। सत्य, एक व्यक्ति के स्वयं की पहचान और जीवन के उद्देश्य को जानने का उत्तर है। यह एक व्यक्ति का उसकी भावनाओं को नियन्त्रित करने के लिए अलगाव का एक ढंग प्रदान करता है।

हम अपनी संस्कृति में विश्वास करते हैं और यह मानते हैं कि मानवता के लिए सेवा ईश्वर के प्रति सेवा है। मानवतावाद समाज कार्य का आधारभूत सिद्धान्त है। यह मनुष्य की योग्यता एवं उसकी गरिमा का सम्मान करता है। समाज कार्य सृजनात्मकता और अन्तर्निहित शक्तियों में विश्वास करता है।

समाज कार्यकर्ता समुचित संस्थाओं और सामयिक अवसरों को उपलब्ध कराने के माध्यम से उनकी शक्तियों को सामने लाता है समाज कार्यकर्ता विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्व वाले, यहाँ तक कि समाज–विरोधी व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों के साथ भी अन्तः क्रिया करेगा। उसे उनके प्रति अनिर्णयात्मक मनोवृत्ति का विकास करना चाहिए और व्यक्तियों और समूहों को जैसे वे हैं वैसे ही स्वीकार करना चाहिए। समाज कार्यकर्ता एक नियन्त्रित व्यवसायिक आत्म से युक्त प्रशिक्षित व्यक्ति होता है जिसके परिणामस्वरूप वह श्रेष्ठता का अनुभव करने से दूर रहता है हालाँकि, सहायता प्रदान करने वाले सम्बन्धों में वह सहायता देने वाले सिरे पर होता है। इसके अतिरिक्त उसे व्यवसायिक प्रयास करते समय सेवार्थी के साथ तनुभव करने में अलग दृष्टिकोण का विकास करना चाहिए।

## सारांश

समाज कार्य का लक्ष्य लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए उनकी सहायता करना है। अधिकतर समाज कार्य अन्तर्वैयक्तिक समस्याओं जैसे– वैवाहिक जीवन की समस्याओं, अभिभावक– बच्चों की समस्याओं, गम्भीर रोगियों के पुनर्वास इत्यादि के साथ कार्य करता है। यह समाज सेवा से भिन्न है। व्यावसायिक सम्बन्धों, आमने–सामने अन्तःक्रिया, शक्ति प्रदान करने वाले तत्वों की उपस्थिति समाज कार्य समाज सेवा से भिन्न बनाती है। समाज कार्य का आधार ज्ञान है जो कि अन्य सामाजिक मनोवैज्ञानिक विज्ञानों से लिया गया है। समाज कार्य की प्रणालियाँ हैं जैसे– समाज केस अध्ययन, सामाजिक सामूहिक कार्य,

सामुदायिक संगठन, सामाजिक क्रिया, समाज कल्याण प्रशसन और समाज कार्य शोध। ये प्रणालियाँ समाज कार्यकर्ता की व्यक्तियों के साथ करने में सहायता करती है।

समाज कार्य के तीन महत्वपूर्ण कार्य हैं– क्षीण सामाजिक क्रिया का पुनर्स्थापना, संसाधनों का प्रबन्ध करना तथा सामाजिक अकर्मण्यता का निवारण करना हैं समाज कार्य का लक्ष्य समस्या का समाधान करना है। यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी मनोसामाजिक समस्याओं के साथ कार्य करता है, अन्तर्नैयक्तिक सम्बन्धों की समस्याओं को ठीक करता है और सामाजिक न्याय दिलाता है। समाज कार्यकर्ता की व्यक्तिगत अभिवृत्तियाँ जैसे– मैदानिक दृष्टिकोण, परिस्थितिकी दृष्टिकोण, अतिवादी दृष्टिकोण, प्रगतिशील समाज कार्य एवं नारीवादी समाज कार्य तक विभिन्न विचारधाराओं का एक लेखा–जोखा प्रस्तुत करता है।

## कुछ उपयोगी पुस्तकें

खिन्दुका, एस.के. सोशल वर्क इन इण्डिया (1965), इलाहाबाद : किताब महल।

स्किडमोर एवं थाक्रे (1976), इन्ट्रोडक्शन टू सोशल वर्क, प्रेन्टिस हाल इंक।

मुरली देसाई, आइडियोलॉजीज एण्ड सोशल वर्क (2002), हिस्टॉरिकल एण्ड कन्टेम्पोररी एनालिसिस, रावत पब्लिकेशन।

ब्रेण्ड डूबोइस एवं कारिया क्रोम्सरूड मिलये, सोशलवर्क एन एम्पावरिंग प्रोफेशन (1991), एलिन एण्ड बेकन पब्लिशर्स।

छाया पटेल, सोशल प्रैक्टिस (1999), रिलिजियो–फिलॉसफी फाउण्डेशन, रसवत पब्लिशर्स।